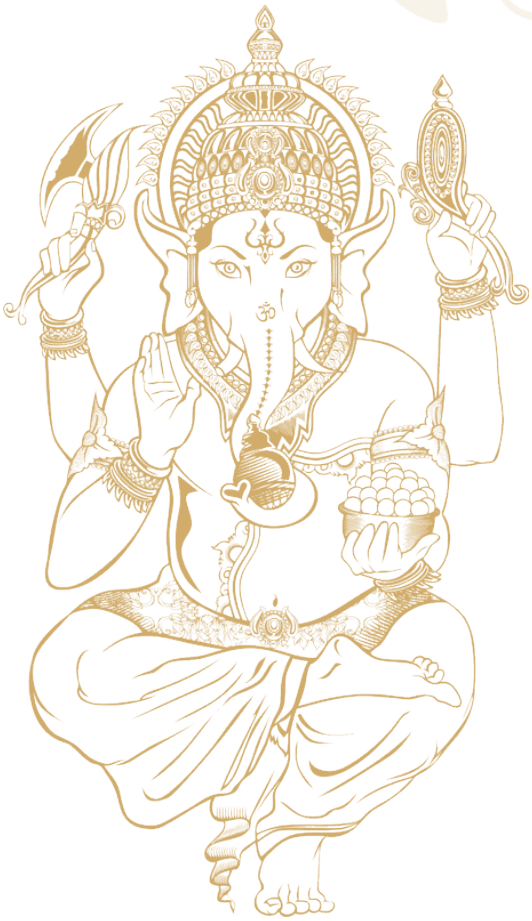

Mr.

Ms.

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120170301

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120170301 Date: 16/11/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
01/10/1994	जन्म तिथि	15/09/2000
शनिवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 19:15:00	जन्म समय	07:00:00 घंटे
घटी 32:22:44	जन्म समय(घटी)	01:57:05 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Sagar
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:38:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	75:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:27:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:17:54	सूर्योदय	06:14:07
18:14:09	सूर्यास्त	18:30:26
23:47:14	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:45
मेष	लग्न	कन्या
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	बुध
कर्क	राशि	मीन
चन्द्र	राशि-स्वामी	गुरु
आश्लेषा	नक्षत्र	उ०भाद्रपद
बुध	नक्षत्र स्वामी	शनि
3	चरण	4
साध्य	योग	गण्ड
कौलव	करण	तैतिल
डे-डेविड	जन्म नामाक्षर	ञ--
तुला	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या
विप्र	वर्ण	विप्र
जलचर	वश्य	जलचर
मार्जार	योनि	गौ
राक्षस	गण	मनुष्य
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
श्वान	वर्ग	सिंह

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 4वर्ष 5मा 1दि		05:10:44	मेष	लग्न	कन्या	08:26:06	शनि 4वर्ष 8मा 5दि	
शुक्र		14:21:54	कन्या	सूर्य	सिंह	28:39:11	केतु	
04/03/2006		26:31:57	कर्क	चंद्र	मीन	13:22:51	22/05/2022	
04/03/2026		04:27:24	कर्क	मंगल	सिंह	04:54:22	22/05/2029	
शुक्र	03/07/2009	09:41:51	तुला	बुध	कन्या	17:25:07	केतु	18/10/2022
सूर्य	04/07/2010	21:23:43	तुला	गुरु	वृष	17:01:25	शुक्र	18/12/2023
चन्द्र	03/03/2012	21:46:14	तुला	शुक्र	कन्या	24:25:09	सूर्य	24/04/2024
मंगल	03/05/2013	13:07:08	कुंभ व	शनि व	वृष	07:06:36	चन्द्र	23/11/2024
राहु	03/05/2016	22:49:20	तुला व	राहु व	मिथु	27:32:19	मंगल	22/04/2025
गुरु	02/01/2019	22:49:20	मेष व	केतु व	धनु	27:32:19	राहु	10/05/2026
शनि	04/03/2022	28:36:04	धनु व	हर्ष व	मक	23:42:25	गुरु	16/04/2027
बुध	02/01/2025	26:47:13	धनु व	नेप व	मक	10:10:33	शनि	25/05/2028
केतु	04/03/2026	02:22:06	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	16:27:50	बुध	22/05/2029

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : माध्य

23:47:14 चित्रपक्षीय अयनांश 23:51:45

लग्न-चलित

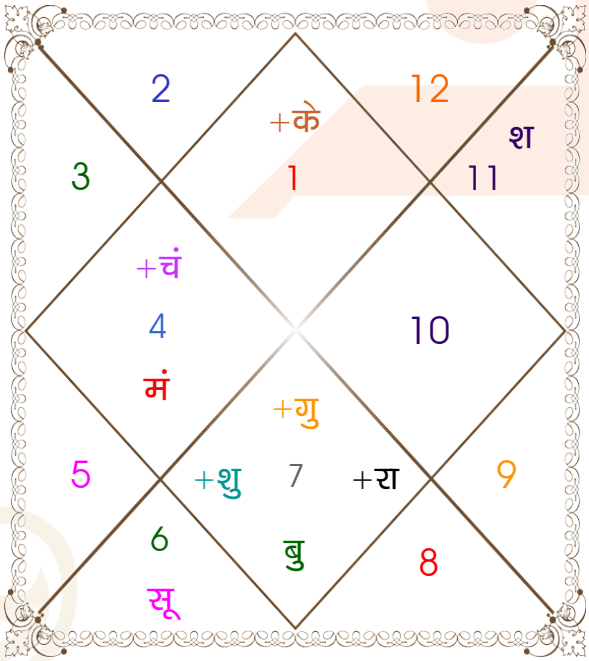

लग्न-चलित

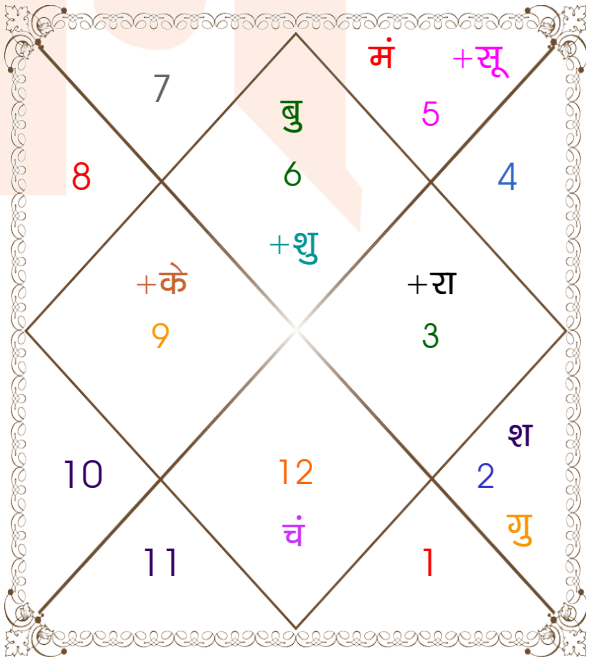

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मार्जार	गौ	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	गुरु	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कर्क	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

कुल : **20 / 36**

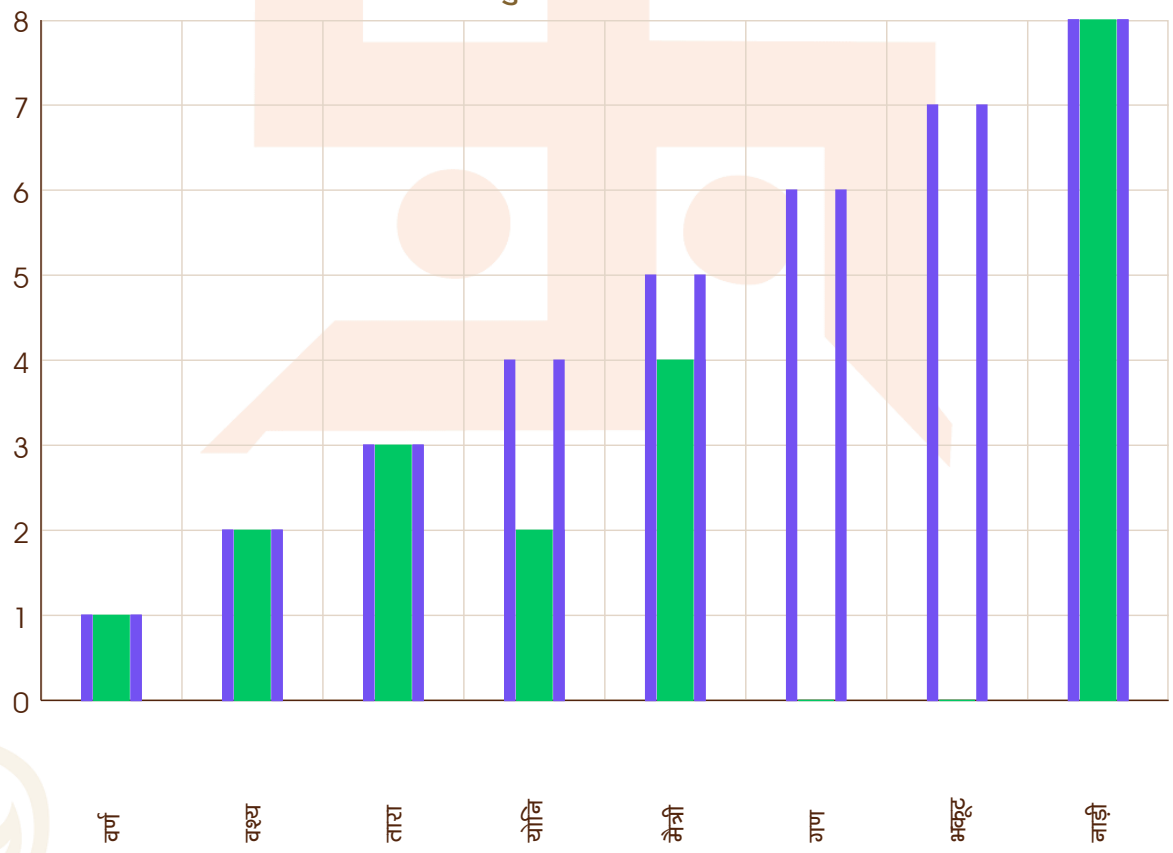

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

अष्टकूट मिलान

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

Mr. का वर्ग श्वान है तथा Ms. का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात यदि बली गुरु और शुक्र स्वराशि या उच्च होकर लग्न या सप्तम भाव में हों तो मंगल का दोष नहीं होता है।

क्योंकि गुरु और शुक्र Mr. कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

ढप्ध्;डडत्मजतवह;0द्धझ0द्धझ क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में वक्री है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र Mr. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr. कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mr. का वर्ण ब्राह्मण तथा Ms. का वर्ण भी ब्राह्मण है अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके कारण दोनों के गुण, स्वभाव, आदतें, पसन्द एवं नापसंद सभी एक-समान होंगी। दोनों एक-दूसरे के बिल्कुल अनुरूप एवं अनुकूल साबित होंगे तथा दोनों हमेशा सामाजिक, व्यावसायिक एवं पारिवारिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में एक-दूसरे की सहायता करेंगे।

वश्य

Mr. का वश्य जलचर है एवं Ms. का वश्य भी जलचर है अर्थात दोनों का वश्य समान ही है। जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों की शारीरिक स्थिति, स्वभाव, पसंद एवं नापसंद एक ही तरह के होंगे। दोनों के बीच अगाध प्रेम एवं सौहार्द बना रहेगा तथा समान दृष्टिकोण, व्यवहार एवं आपसी समझ होने के कारण एक-दूसरे के साथ सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। ऐसा प्रतीत होगा कि दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हुए हैं तथा एक-दूसरे के साथ का आनंद लेते रहेंगे। दोनों एक-दूसरे के कामों में मदद करते रहेंगे तथा परिवार की प्रगति एवं समृद्धि में महती योगदान देंगे।

तारा

Mr. की तारा सम्पत तथा Ms. की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से Mr. एवं Ms. दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। Ms. एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

Mr. की योनि मार्जार है तथा Ms. की योनि गौ है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है।

इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr. का राशि स्वामी Ms. के राशि स्वामी से सम का संबंध रखता है। जबकि Ms. का राशिस्वामी Mr. के राशिस्वामी के साथ मित्रता का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए सम हों किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को अपना मित्र मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

Mr. का गण राक्षस है तथा Ms. का गण मनुष्य है। अर्थात Ms. का गण Mr. के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान बहुत बुरा मिलान रहेगा। ज्योतिषीय दृष्टि से यह संबंध अधिक दिनों तक नहीं रहने वाला होगा। दोनों के वैचारिक मतभेद परिवार के सदस्यों के जीवन को अशांत बना सकते हैं। ऐसा विवाह त्याज्य है।

भकूट

Mr. से Ms. की राशि नवम भाव में स्थित है तथा Ms. से Mr. की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। Mr. की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

Mr. की नाड़ी अन्त्य है तथा Ms. की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

Mr. की जन्म राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है तथा Ms. की राशि भी जलतत्व युक्त राशि मीन है। नैसर्गिक रूप से जलतत्व की जलतत्व से समानता एवं मित्रता होती है। अतः Mr. और Ms. के मध्य स्वभावगत समानताएं विद्यमान होंगी जिससे परस्पर संबधों में मित्रता का भाव रहेगा। अतः मिलान उत्तम रहेगा।

Mr. की जन्मराशि का स्वामी चन्द्रमा तथा Ms. की राशि का स्वामी बृहस्पति परस्पर मित्र एवं समराशियों में स्थित है। वैवाहिक जीवन की सुख शांति एवं समृद्धि के लिए यह स्थिति अच्छी मानी जाती है। इसके प्रभाव से Mr. और Ms. एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे परस्पर दाम्पत्य संबधों में मधुरता बनी रहेगी। साथ ही Mr. और Ms. का परस्पर आकर्षण लगाव एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहेगा एवं सम्मान जनक ढंग से एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना रहेगी।

Mr. और Ms. की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से Mr. और Ms. के मध्य अनावश्यक मतभेद एवं विरोध का भाव विद्यमान रहेगा। तथा यदा कदा अंहकार के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। इससे सुखी वैवाहिक जीवन में व्यवधान उत्पन्न होंगे। अतः Mr. और Ms. को चाहिए कि उपरोक्त दुष्प्रभावों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करें तभी दाम्पत्य जीवन की समृद्धि एवं शांति में वृद्धि हो सकती है।

Mr. और Ms. दोनों का वश्य जलचर है। अतः दोनों की अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी सामंजस्य बना रहेगा। अतः दाम्पत्य सुख में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करके शांति पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे ।

Mr. और Ms. दोनों का वर्ण ब्राह्मण है। अतः दोनों की रूचि शैक्षणिक एवं धार्मिकता के प्रति रहेगी तथा उत्साह एवं इच्छापूर्वक अपने कार्यो को करने में तत्पर रहेंगे।

धन

Mr. की तारा सम्पत तथा Ms. की तारा अतिमित्र है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा इच्छित मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा अन्यत्र भी लाभ मार्ग नित्य प्रशस्त रहेंगे। भकूट का इनकी आर्थिक स्थिति पर कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा। लेकिन Mr. पर मंगल के दुष्प्रभाव के कारण आर्थिक क्षेत्र में यदा कदा व्यवधान या विषमता की स्थिति आ सकती है परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा।

Mr. एक धनाढ्य तथा भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा Ms. के शुभ प्रभाव से धन वृद्धि में तत्पर रहेंगे परन्तु मंगल के प्रभाव से Ms. की प्रवृति यदा कदा अनावश्यक व्यय करने की होगी तथा व्यर्थ के विलासमय वस्तुओं पर मुक्त भाव से व्यय करेंगी। अतः Ms. को चाहिए कि ऐसी प्रवृतियों की उपेक्षा करें।

स्वास्थ्य

Mr. अन्त्य तथा Ms. का जन्म मध्य नाड़ी में हुआ है। अतः नाड़ी दोष का इन पर कोई प्रभाव नहीं रहेगा तथा जीवन में गभीर खतरों से ये सुरक्षित रहेंगे। लेकिन मंगल का Mr. और Ms. दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा जिससे दोनों धातु या गुप्त संबधी रोगों से परेशानी की अनुभूति कर सकते है। साथ ही Mr. की संभोग शक्ति में शिथिलता एवं हृदय संबंधी रोग भी उत्पन्न हो सकता है। उन्हें मूत्र संबंधी कष्ट की भी उन्हें प्राप्ति होगी जिससे दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक कलह तथा अशांति होगी। अतः इसके प्रभाव को कम करने के लिए Mr. और Ms. को हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mr. और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mr. और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mr. और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mr. और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद Ms. अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से Ms. पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि Ms. अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

Mr. के अपने सास ससुर से संबध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव तथा मतभेद बने रहेंगे जिसका मुख्य कारण इन के मध्य आयु का अधिक अंतर रहेगा। इससे इनके मध्य सैद्धांतिक तथा वैचारिक मतभेद सामान्य रूप से विद्यमान रहेंगे। लेकिन यदि Mr. तथा उनके सास ससुर परस्पर सामंजस्य को स्थापित करके व्यवहार करें तो उपरोक्त मतभेदों तथा समस्याओं में काफी न्यूनता हो सकती है।

साथ ही साले एवं सालियों से भी कई क्षेत्रों में असहमति रहेगी तथा संबध विशेष मधुर नहीं रहेंगे फलतः आपस में स्नेह सहयोग एवं सहानुभूति के भाव की न्यूनता रहेगी। अतः इन्हें चाहिए कि बुद्धिमता एवं सामंजस्य युक्त प्रवृति से मतभेदों तथा समस्याओं का समाधान करें तथा मित्रता का भाव भी रखें। इससे उपरोक्त मतभेदों में अल्पता आएगी तथा मधुर संबधों में वृद्धि भी होगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से Mr. के ससुराल वालों का दृष्टिकोण उनके प्रति अपेक्षित नहीं रहेगा। अतः उन्हें चाहिए कि दामाद के प्रति अपने दृष्टिकोण को विनम्र तथा सहयोग के भाव से युक्त बनाएं।